हक मासूक के श्रवण अंग

श्रवन की किन विध कहूं, लेत आसिक इत आराम।
देख सुन सुख पावहीं, आसिक रूह इन ठाम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री राजजी महाराज़ के श्रवण अंग (कानों) की हकीकत कैसे कहूं, जहां आशिक रूहों को आराम मिलता है। कानों को देखकर अपनी बात सुनाकर आशिक रूहें सुख प्राप्त करती हैं।

कानन के गुन अनेक हैं, सुख आसिक बिना हिसाब।
आठों जाम इत पीवहीं, अर्स अरवाहें ए सराब।। २ ।।

श्री राजजी महाराज के कानों में अपार गुण हैं, जिससे आशिक रूहों को बेहिसाब सुख मिलता है। रूहें रात-दिन इन कानों के द्वारा ही परमधाम की इश्क की मस्ती प्राप्त करती हैं।

देख कोमलता कान की, नैनों सीतलता होए।
आसिक इन सरूप के, ए सुख जानें सोए।। ३ ।।

कानों की कोमलता देखकर नेत्र भी तृप्त हो जाते हैं। श्री राजजी महाराज के स्वरूप की आशिक जो रूहें हैं, वही इस सुख को जानती हैं।

मासूक का मुख सोभित, देख लवने केस कान।
पेहेचान वाले सुख पावहीं, देख अर्स अजीम सुभान।। ४ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द, गाल, बाल और कानों की शोभा देखने योग्य है। इस स्वरूप को पहचानने वाले ही श्री राजजी महाराज और परमधाम का सुख प्राप्त करते हैं।

कानों सुनें आसिक की, दिल दे गुझ मासूक।
कहे आधा सुकन इस्क का, आसिक होए जाए भूक भूक।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ध्यान देकर अपने आशिकों की गुप्त बातें अपने कानों से सुनते हैं। श्री राजजी महाराज इश्क का आधा वचन भी कह देते हैं तो आशिक उन शब्दों पर फना हो जाते हैं।

मुख जुबां मासूक की, सो भी कानों के ताबीन।
रूह देखे गुन कानन के, जासों हक जुबां होत आधीन।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की जबान भी कानों के अधीन है। रूहों ने श्री राजजी महाराज के कानों के गुण को देखकर ही यह अनुभव किया कि श्री राजजी महाराज की जबान कानों के अधीन है, अर्थात् जैसे सुनते हैं उसी अनुसार बोलते हैं।

हकें आसिक नाम धराइया, वाको भी अर्थ ए।
मासूक उलट आसिक हुआ, सो भी बल कानन के।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने आपको जो आशिक कहा है, उसका भाव कान की शक्ति के अनुसार है, जो माशूक की बजाय आशिक कहलाए।

Nijanand App

हक कहे मेरा नाम आसिक, सो भी सुनके गुझ मोमिन।
ए जानें अरवा अर्स की, कहूं केते कानों गुन।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि मेरा नाम आशिक है। यह बात भी मोमिनों के अन्दर की बात सुनकर कहते हैं, इसलिए परमधाम की जो रूहें हैं, वह कानों के गुण को जानती हैं।

खावंद अर्स अजीम का, गुझ सुनत रात दिन।
ए जो अरवाहें अर्स की, कई सुख लेवें कानन।। ९ ।।

परमधाम के धनी रूहों के दिल की छिपी बातें रात-दिन सुनते हैं, इसलिए परमधाम की रूहें कानों से कई तरह के सुख लेती हैं।

हक आसिक हुआ याही वास्ते, सो रूहें क्यों न सुनें हक बात।
ए कौन जाने अर्स रूहों बिना, कान गुन अंग अख्यात।। १० ।।

इसी कारण श्री राजजी महाराज आशिक बने, तो फिर रूहें श्री राजजी की बात को क्यों नहीं सुनती हैं? कानों के इन छिपे गुणों को रूह के अतिरिक्त और कौन जानता है?

बोहोत बड़े गुन कानके, बिना आसिक न जाने कोए।
कई गुझ गुन श्रवनके, और कोई जाने जो दूसरा होए।। ११ ।।

कानों के गुण बहुत अधिक हैं। इन्हें आशिक रूहों के बिना और कोई नहीं जानता। इस तरह से कानों के कई छिपे गुण भी हैं, जिसे रूहों के अतिरिक्त कोई दूसरा हो तो जाने?

और देखो गुन काननके, जब हक देत रूहों कान।
वाको ले अपने नजरमें, देखें सनकूल दृष्ट सुभान।। १२ ।।

कानों के और गुणों को देखो। जब श्री राजजी महाराज रूहों की बात को कानों से सुनते हैं तो उसे प्रसन्न स्वभाव से अपनी नजर में रख लेते हैं, जिसे देखकर रूहें भी प्रसन्न होती हैं।

सब सुख पावे रूह तिनसों, हुए नेत्र भी कानों तालूक।
सीतल दृष्टें देखत, ए जो मासूक मलूक।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्र भी कानों से सम्बन्ध रखते हैं। रूहों को हर तरह के सुख इनसे मिलते हैं। ऊपर से माशूक श्री राजजी महाराज जब शीतल नजर से देखते हैं तो और सुख मिलता है।

ए सब बरकत कानों की, सो सुन सुन रूहकी बान।
दिल भी हक तहां देत हैं, मेहेर करत मेहेरबान।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों के वचनों को सुनकर मेहर कर उनको अपना दिल देते हैं। यह सब बरकत कानों की है।

ए गुन सब कानन के, कई गुझ सुख रूह परवान।
रूहें कई सुख कानों लेत हैं, रेहेमत इन रेहेमान।। १५ ।।

कानों के गुणों से रूहें कई छिपे सुख भी प्राप्त करती हैं और मेहरबान श्री राजजी की मेहर से रूहें कानों के कई सुख लेती हैं।

Nijanand App

हक इस्क जो करत है, सो सब कानों की बरकत।
अनेक सुख हैं इनमें, सो जानें हक निसबत।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज इश्क करते हैं सब कानों की कृपा से, इसमें बेशुमार सुख हैं। वह परमधाम की अंगना ही जानती हैं।

आसिक जाए कहूं ना सके, छोड़ सुख हक श्रवन।
हिसाब नहीं गुन कानोंके, कोई सके न ए गुन गिन।। १७ ।।

आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के कानों के सुख को छोड़कर कहीं और नहीं जा सकतीं। इस तरह से कानों में बेशुमार गुण हैं, जिन्हें कोई गिन नहीं सकता।

खोल देखो एक इस्क को, तो कई सुख अर्स अपार।
सो सुख लेसी कर बेवरा, जो होसी निसबती हुसियार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज के एक इश्क के ही सुख को विचार कर देखो। तो परमधाम में इस तरह के बेशुमार सुख मिलेंगे। जो श्री राजजी महाराज की हुशियार अंगना होगी, वह इन सुखों का विवरण करके लेगी (वह श्री राजजी महाराज के किसी सुख को छोड़ेगी नहीं)।

दिल के सुख केते कहूं, जो हक दिल दरिया पूरन।
सब अंग ताबे दिल के, होसी अर्स में हिसाब इन।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज का दिल सागर के समान सुख से भरपूर है। उनके सुखों को कैसे कहूं? क्योंकि सभी अंग दिल के अधीन होते हैं। इन सुखों का हिसाब परमधाम में ही हो सकता है।

तो इन जुबां क्यों होवहीं, हक हादी सागर सुख।
ए बारीक सुख बीच अर्सके, होसी मूल मेलेके मुख।। २० ।।

श्री राजश्यामाजी के सुख सागर के समान हैं। यह खास अर्श के सुख हैं, जिनका इस जबान से वर्णन कैसे करें? इन खास सुखों की चर्चा जब परमधाम में मिलेंगे तो वहीं होगी।

जो अर्थ ऊपरका लेवहीं, सो सुख जानें एक हक श्रवन।
एक एक के कई अनेक, सो कई गुन मगज लेवें मोमिन।। २१ ।।

यदि ऊपर के अर्थ से देखें तो एक श्री राजजी महाराज के श्रवण ही इस सुख को जानते हैं। जिस एक-एक सुख में कई तरह के अनेक सुख हैं। उन सभी सुखों को मोमिन लेते हैं।

कई अंग ताबे कानके, कान अंग सिरदार।
कोई होसी रूह अर्सकी, सो जानेगी जाननहार।। २२ ।।

कान अंग-सिरदार (प्रमुख) है। इसके अधीन कई अंग हैं। जो परमधाम की रूह होगी वही इसको जान सकेगी।

इलम भी ताबे कानों के, जो इलम कह्या बेसक।
ए झूठी जिमिएं सेहेरग से नजीक, इन इलमे पाइए इत हक।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज का इलम भी कानों के अधीन है, जिसे संशय मिटाने वाला जागृत बुद्धि का ज्ञान कहा है। इस झूठी जमीन में सेहेरग से भी नजदीक श्री राजजी महाराज को इलम के द्वारा ही खेल में प्राप्त करते हैं।

Nijanand App

कई गुन हैं कानन के, जाके ताबे दिल खसम।
क्यों सिफत कहूं इन दिलकी, जिन दिल ताबे हुकम।। २४ ।।

कानों के बहुत गुण हैं। इनके अधीन श्री राजजी महाराज का दिल है। इस दिल की सिफत का कैसे बयान करूं, जिसके अधीन हुकम रहता है।

हुकम इलम ताबे कान के, मेहेर दिल ताबे इस्क के।
क्यों कहूं इनसे आगे वचन, कानों ताबे भए सागर ए।। २५ ।।

हुकम और इलम इस तरह दोनों कानों के अधीन हैं। इसी तरह से मेहर और दिल इश्क के अधीन हैं। इनसे आगे अब क्या कहूं? कानों के अधीन इलम और इश्क का सागर हो गया है।

निकस न सके आसिक, हक के एक अंग से।
तिन अंग ताबे कई सागर, अर्स रूहें पड़ी इनमें।। २६ ।।

आशिक रूह श्री राजजी महाराज के एक ही अंग से बाहर नहीं निकल सकती, फिर उस अंग के अधीन कई सागर होते हैं। परमधाम में रूहें इन सागरों में डूबी रहती हैं।

जो सागर कहे ताबे कान के, तिन सागरों ताबे कई सागर।
जो गुन देखूं हक एक अंग, याथें रूह निकसे क्यों कर।। २७ ।।

कानों के अधीन जिन सागरों का वर्णन किया है, उन सागरों के अधीन कई सागर हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज के एक अंग के गुण को ही देख लें तो उससे रूह बाहर नहीं निकल सकती।

जो गुन मैं केहेती हों, हक अंग गुन अपार।
अर्स रूहें गिनें गुन अंग के, सो गुन आवे न कोई सुमार।। २८ ।।

यहां जो गुण की बात कही है, श्री राजजी महाराज के अंग में ऐसे बेशुमार गुण हैं। अर्श की रूहें श्री राजजी महाराज के अंग के गुणों को यदि गिनती हैं, तो गुण बेशुमार हैं।

सुनो मोमिनों एक ए गुन, एक अंग ऊपर के कान।
अंग अपार कहे कई बातून, अजूं जुदे भूखन सुभान।। २९ ।।

हे मोमिनो! अंग के ऊपर कान के एक गुण को सुनो। मैंने बातूनी में कई अंगों का वर्णन किया है और अलग-अलग आभूषणों का वर्णन किया है।

जैसी सोभा देखों साहेब की, तैसे कानों पेहेने भूखन।
आसमान जिमी के बीचमें, हो रही सबे रोसन।। ३० ।।

मैंने जैसी श्री राजजी की साहेबी देखी। तैसे ही कानों के आभूषण देखे। उन आभूषणों की रोशनी जमीन और आसमान में सब जगह फैल रही है।

एक अंगमें कई खूबियां, सो एक खूबी कही न जाए।
तिन खूबी में कई खूबियां, गिनती होए न ताए।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज के एक ही अंग में कई खूबियां हैं। उनमें से एक ही खूबी का वर्णन कहने में नहीं आता, क्योंकि खूबी में भी कई खूबियां हैं, जिनकी गिनती नहीं होती।

Nijanand App

सो खूबियां भी अर्स की, जाके कायम सुख अखंड।
सो कायम सुख इत क्यों कहूं, ए जो जुबां इन पिंड।। ३२ ।।

वह खूबियां भी परमधाम की हैं जिनके सुख अखण्ड हैं। वहां के अखण्ड सुख का इस शरीर की जबान से कैसे वर्णन करें?

क्यों बरनों अर्स अंगको, एक अंग में अनेक रंग।
जो देखों ताके एक रंग को, तिन रंग रंग कई तरंग।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के एक अंग का वर्णन कैसे करें, क्योंकि उस एक अंग में अनेक रंग है, फिर उनमें से एक रंग को देखती हूं तो एक रंग में कई तरंगें हैं।

सो एक तरंग ना केहे सकों, एक तरंगे कई किरन।
जो देखूं एक किरनको, तो पार ना पाऊं गुन गिन।। ३४ ।।

जब एक तरंग का वर्णन नहीं कर सकती तो एक ही तरंग में कई किरणें हैं। जो एक किरण को देखती हूं तो गुण गिनना सम्भव नहीं रह जाता।

एह निमूना देत हों, सो रूहें जानें जो सिफत करत।
जथार्थ सब्द न पोहोंचहीं, तो जुबां पोहोंचे क्यों हक सिफत।। ३५ ।।

मैंने यह नमूना रूहों के वास्ते बताया है। परमधाम की रूहें इनके गुणों को जानती हैं। वही सिफत करती हैं। यहां के शब्द सत का वर्णन करने के लिए नहीं मिलते, तो जबान से श्री राजजी महाराज की सिफत कैसे गाई जाए?

जो कबूं कानों ना सुनी, सो सुन जीव गोते खाए।
दम ख्वाबी बानी वाहेदत की, सुनते ही उड़ जाए।। ३६ ।।

जीवों ने जिस वाणी को कानों से नहीं सुना था तो उसे सुनकर जीव अब गोते लगा रहा है। वैसे अखण्ड परमधाम की वाणी को सुनते ही संसार का जीव तन छोड़ देता।

श्रवन गुन गंज क्यों कहूं, जाके ताबे हुए कई गंज।
इन गंजों गुन सुख सो जानहीं, जिन बका हक समझ।। ३७ ।।

कानों के बेशुमार गुणों का कैसे वर्णन करूं जिनके अधीन कई गंजान गंज सुख हैं। जिन्हें अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान है, वही गंजान गंज सुखों को जानती हैं।

गुन एक अंग कह्यो न जावहीं, जो देखों दिल धर।
तो गंज अलेखे अपार के, सुख कहूं क्यों कर।। ३८ ।।

दिल से विचार करके देखो तो अंग के गुणों का वर्णन नहीं कहा जाता, फिर बेशुमार गंजान गंज सुख भरे हों तो उनको किस तरह से कहें?

जब देखों गुन श्रवना, जानों कोई न इन सरभर।
सहूर करों एक गुन सुख, तो जाए निकस उमर।। ३९ ।।

जब कानों के गुणों को देखती हूं तो लगता है इनके समान दूसरा कोई नहीं है। एक गुण के सुखों का विचार करती हूं तो उसी में संसार वाली सारी उम्र निकल जाती है।

Nijanand App

ताथें सुख और अंगोंके, सो भी लिए दिल चाहे।
ना तो श्रवन ताबे कई गंज हुए, ताको एक गुन दिल न समाए।। ४० ।।

इसलिए दूसरे अंगों के सुख भी मैंने अपने दिल की चाहना के अनुसार लिए, वरना कानों में ही गंजान गंज गुण और सुख भरे थे, जिसके एक गुण का सुख भी दिल में नहीं समाता।

ए सुख बिना हिसाब के, ए जानें मोमिन दिल अर्स।
ए रस जिन रूहों पिया, सोई जानें दिल अरस–परस।। ४१ ।।

जिन मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं, वही इन बेशुमार सुखों को जानते हैं। इस रस को जिन्होंने पीया है, वही श्री राजजी महाराज के तथा अपने दिल के अरस-परस सुखों को जानती हैं।

जो देखी सारी कुदरत, सो भी इन श्रवनकी बरकत।
जो विचार करों इन तरफको, तो देखों सबमें एही सिफत।। ४२ ।।

इन कानों की कृपा से ही कुदरत का सारा माया का खेल देखा जब परमधाम की तरफ विचार करती हूं तो वहां के अंगों में यही सिफत दिखाई देती है।

जो सहूर कीजे हक सिफतें, तो ए तो हक बका श्रवन।
ए सुख क्यों आवें सुमार में, कछू लिया अर्स दिल मोमिन।। ४३ ।।

जो श्री राजजी महाराज की कृपा से विचार करके देखें तो यह श्री राजजी महाराज के अखण्ड श्रवण के सुख हैं। इन बेशुमार सुखों में से कुछ हिस्सा मोमिनों ने अपने अर्श दिल में लिया है।

जेता सहूर जो कीजिए, सब सिफतें सिफत बढ़त।
जो कदी आई बोए इस्क, तो मुख ना हरफ कढ़त।। ४४ ।।

जितना विचार करके देखें, सिफतें बढ़ती ही जाती हैं। यदि इश्क की खुशबू मिल गई तो फिर जबान से एक हरफ भी नहीं निकलता।

कहे हुकमें महामत मोमिनों, क्यों कहे जाए गुन कानन।
जाके ताबे कई गंज सागर, ए सुख सेहे सकें अर्सके तन।। ४५ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी महाराज के हुकम से मोमिनों से कहती हैं कि श्री राजजी महाराज के कानों के गुणों को कैसे कहें? क्योंकि इन कानों के अधीन कई गंजान गंज सुखों के सागर भरे पड़े हैं, जिनको परमधाम के तन ही सहन कर सकते हैं।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७५३ ॥

हक मासूक के नेत्र अंग

देखों नैना नूरजमाल, जो रूहों पर सनकूल।
अरवा होए जो अर्स की, सो जिन जाओ खिन भूल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे अर्श की रूहों! नूरजमाल श्री राजजी महाराज जो अपनी रूहों पर फिदा हैं, उनके नैनों को देखो। तुम इनको एक क्षण के लिए भी मत भूलो।

Nijanand App